

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 6, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 1, कांट, श्लेयरमाकर और रीट श्ल

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 6 है, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 1, कांट, श्लेयरमेकर और रिट्शल।

हम आधुनिक क्राइस्टोलॉजी के बारे में अधिक पृष्ठभूमि जानकारी प्रदान करके आधुनिक क्राइस्टोलॉजी पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद। 19वीं सदी यूरोप में प्रोटेस्टेंट उदारवाद की सदी थी। उत्तरी अमेरिका में, लेकिन विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में, उदारवादी युग केवल मध्य शताब्दी में शुरू हुआ, और यह यूरोप की तुलना में बाद में समाप्त हुआ।

वहाँ, इसका अंत प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत और कार्ल बार्थ के प्रमुखता में उदय से हुआ। उत्तरी अमेरिका में, उदारवाद 1930 के दशक में फला-फूला, जब यह मंदी और यूरोप से नव-रूढ़िवादी विचारों के प्रवाह का शिकार बन गया। रोमन कैथोलिक पक्ष में, क्राइस्टोलॉजी ऐसा मुद्दा नहीं था जिस पर मतभेद था, या उस मामले में, बहुत रचनात्मक विचार नहीं था।

ट्रेंट की परिषद, 1545-1563, जिसका उद्देश्य सुधारवादी धर्मशास्त्र को नकारना था, ने क्राइस्टोलॉजी पर कोई घोषणा नहीं की। यह विवाद का विषय नहीं था। इसके बाद के काउंटर-रिफॉर्मेशन काल में, कैथोलिक धर्मशास्त्रियों ने केवल पिछले विचारधाराओं को दोहराया और परिष्कृत किया।

इसका एकमात्र अपवाद कैथोलिक आधुनिकतावाद का उभार था, 1890-1910। आधुनिकतावादी, हालांकि हमेशा इस बात पर जोर देते रहे कि उनके और उदार प्रोटेस्टेंट के बीच बहुत अंतर है, वास्तव में उदारवाद में प्रचलित कई विचारों को पुनः प्रस्तुत किया। आंदोलन को समाप्त कर दिया गया, लेकिन एक उपयुक्त अंतराल के बाद, उन्हीं विचारों में से कुछ को द्वितीय वेटिकन परिषद, 1962-1965 द्वारा स्वीकार कर लिया गया, और वे कैथोलिक रूढ़िवाद का हिस्सा बन गए।

19वीं सदी, बेशक, ज्ञानोदय विचारकों के युग की भी थी। प्रोटेस्टेंट उदारवाद और कैथोलिक आधुनिकतावाद दोनों में क्राइस्टोलॉजी के निर्माण में यह एक महत्वपूर्ण कारक था। दोनों आंदोलन प्रकृति में क्षमाप्रार्थी थे।

दोनों ही इस डर से प्रेरित थे कि आधुनिकता ईसाई धर्म को पीछे छोड़ रही है। इन आंदोलनों के समर्थकों ने इसका विरोध किया कि ईसाई धर्म का सार पुराना नहीं था, बल्कि इसका सैद्धांतिक आवरण पुराना था। इसलिए, श्लेयरमेकर ने इसके सुसंस्कृत तिरस्कार करने वालों के साथ

समझौता करने की कोशिश की, उनके शब्दों में, सामान्य सैद्धांतिक सहमति में नहीं, बल्कि चेतना के सामान्य आंतरिक मूल में, जिसे धर्म के रूप में पहचाना जा सकता था और जिसके साथ ईसाई तत्वों का मिश्रण बनाया जा सकता था।

हालाँकि, यह चेतना उस संस्कृति द्वारा आकार लेती थी जिसमें इसे बनाया गया था, और इसलिए, श्लेयरमेकर ने जिस तरह के विश्वास की बात की थी, वह अनिवार्य रूप से ऐसा था जो मसीह और संस्कृति के बीच निरंतरता पर जोर देता था। व्याख्यानों की इस श्रृंखला के पहले परिचय को याद करें। हमें ऊपर से क्राइस्टोलॉजी के बीच अंतर करना चाहिए, जो शाश्वत पुत्र से शुरू होता है, जो एक आदमी बन जाता है, और नीचे से क्राइस्टोलॉजी, जो एक आदमी, यीशु से शुरू होता है, और वास्तव में कभी ऊपर नहीं पहुंच सकता है।

या, उसी बात को कहने का दूसरा तरीका क्राइस्टोलॉजीज जो ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच असंत्यता पर जोर देते हैं, ईश्वर मसीह में, अवतार में सृष्टि में आते हैं, या क्राइस्टोलॉजीज, जो ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच निरंतरता पर जोर देते हैं, यीशु एक मात्र मनुष्य हैं, यद्यपि मानवता का सबसे बेहतरीन फूल हैं। इसी तरह, अंग्रेजी कैथोलिक आधुनिकता के पैगंबर जॉर्ज टायरेल ने अपनी रणनीति के बारे में कहा कि यह विश्वास और आधुनिकता के बीच एक संश्लेषण के निर्माण को आवश्यक बनाता है, जिसमें दोनों के लिए जो आवश्यक था उसे संरक्षित किया जाएगा। इसलिए, संश्लेषण को समझने के लिए, हमें आधुनिकता के उन आवश्यक तत्वों को ध्यान में रखना होगा जिनसे विश्वास खुद को जोड़ रहा था।

19वीं सदी की चेतना के निर्माण में कम से कम तीन व्यापक प्रेरणाएँ केंद्रीय थीं, जो इसे ज्ञानोदय द्वारा विरासत में मिली थीं। ये थे, पहला, सत्ता-विरोधी पूर्वाग्रह; दूसरा, मानवीय स्वायत्तता का उदय; और तीसरा, आंतरिक चेतना पर ध्यान। नंबर एक, सत्ता-विरोधी मनोदशा, निश्चित रूप से, कई रूप लेती थी।

लेकिन पादरी-विरोधी भावना और बाइबिल के प्रति अविश्वास सबसे महत्वपूर्ण थे। बाइबिल और चर्च दोनों को एक पुरानी व्यवस्था का हिस्सा माना जाता था, जिसे हटाना नए के उद्भव के लिए आवश्यक था। इसने थॉमस पेन जैसे बुद्धिजीवियों द्वारा ईसाई धर्म का मजाक उड़ाया और यूरोप में, इसके परिणामस्वरूप चर्च के खिलाफ हिंसा भी हुई।

अर्थ के स्रोत के रूप में चर्च के स्थान पर अनुभवजन्य दुनिया को प्रतिस्थापित किया गया। इसने भी कई रूप लिए, कुछ हेगेल की तरह, किताबों ने इतिहास को, दूसरे फ्रायड ने मानव प्रकृति को, और दूसरे डार्विन ने प्राकृतिक दुनिया को। मुद्दा यह था। हालाँकि, उस अर्थ और मूल्यों की तलाश उन तरीकों से की जा रही थी जो मध्ययुगीन और सुधार यूरोप में प्रचलित थे।

उन्हें पारंपरिक धार्मिक क्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी खोजा जा रहा था। इस विकास के साथ-साथ दो चीजें मानवीय स्वायत्तता के उद्भव की थीं। दुनिया में जीवन की व्याख्या अब चर्च या बाइबल से नहीं, बल्कि बिना किसी सहायता वाले मानवीय व्याख्याकार के दृष्टिकोण से की जा रही थी।

आखिरकार, डेसकार्टेस के अनुसार, व्याख्याकार ही वह सच्चा अर्थ खोज सकता है जो दुनिया में निश्चित है। उन्होंने तर्क दिया कि, हर चीज़ पर संदेह करना और सवाल उठाना संभव है। लेकिन जब संदेह की यह प्रक्रिया पूरी हो गई, तो एक चीज़ अछूती रह गई, और वह थी मानवीय चेतना।

तब मानव चेतना में एकीकरण का एक बिंदु खोजा गया, जिससे अनुभव के सभी विविध तत्वों की समझ प्राप्त होगी। इसलिए, बाइबल और चर्च जैसे बाहरी अधिकार से व्याख्याकार के अधिकार की ओर बदलाव, आंतरिक चेतना पर एक विस्तृत चर्चा में बदल गया। हालाँकि, इस चेतना की पवित्रता और अनुल्लंघनीयता को दो पूरी तरह से अलग दिशाओं से गंभीर रूप से कमजोर किया गया था।

18वीं सदी के अंत में, कांट ने तर्कवादियों द्वारा बनाए गए तर्क में विश्वास को नष्ट कर दिया, और 19वीं सदी में, फ्रायड ने चेतना की मासूमियत और सरलता में विश्वास को हिला दिया। कांट का तर्क, निश्चित रूप से, यह था कि तर्क केवल संवेदी धारणा की धारा के साथ मिलकर काम कर सकता है। इसका मतलब है कि हम अपनी इंद्रियों से ज़्यादा कुछ नहीं जान सकते हैं, और जो हम जानते हैं उसे सीधे तौर पर मौजूद चीज़ों के बराबर नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि तर्क इंद्रियों से प्राप्त जानकारी को वर्गीकृत और व्यवस्थित करता है।

तर्क उस वस्तु के बीच में हस्तक्षेप करता है जिसे माना जाता है और वह वस्तु व्यक्ति द्वारा क्या समझी जाती है। यह एक स्क्रीनिंग डिवाइस है, और इसका कारण यह है कि इसका कार्य संवेदी धारणा को व्यवस्थित करना है। कांट के दर्शन के परिणाम बहुत बड़े थे, लेकिन धर्मशास्त्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण वे थे जो उनके अनुभववाद से निकले।

हमारी इंद्रियों के माध्यम से हम तक जो पहुंचता है या जो अर्थ के रूप में निर्मित होता है और हमारे तर्क द्वारा दुनिया पर थोपा जाता है, उसके अलावा कुछ भी नहीं जाना जा सकता है, उत्तरार्द्ध का एक उदाहरण कारण और प्रभाव है जिसके द्वारा हम दुनिया में होने वाली घटनाओं का अर्थ समझते हैं, लेकिन जो हमें दुनिया से अनुभवजन्य रूप से ज्ञात नहीं होता है। इंद्रियाँ चीज़ों के एक दूसरे से संबंधों को नहीं जान सकती हैं, केवल उनके अनुभवजन्य गुणों जैसे आकार, आकृति, बनावट और स्थिति को जान सकती हैं। हालाँकि, कांट के अनुक्रम में, जिसकी मैंने अभी चर्चा की है, वह शुद्ध तर्क की उनकी आलोचना थी; अब, अपने *व्यावहारिक तर्क की आलोचना में*, वह किसी न किसी रूप में ईसाई नैतिकता को बनाए रखना चाहते हैं।

शायद उसने देखा कि अगर उसने दुनिया को समझने की नींव को पूरी तरह से नष्ट कर दिया होता, तो क्या हासिल होता। वह नहीं चाहता था कि किसी भी चीज़ में कोई विश्वास न रहे। हालाँकि, कांट के अनुक्रम में, एक तरफ धर्म से जो छीन लिया गया था, उसे अब दूसरी तरफ फिर से पेश किया गया था।

तर्क पर उनके सख्त रुख को देखते हुए, ऐसा लगता है कि ईश्वर-चर्चा बिल्कुल असंभव थी। पुराने आधार पर, कांट ने तर्क दिया था कि यह था, लेकिन फिर उन्होंने नैतिक चेतना की उपस्थिति पर जोर दिया, जो अपने आप में अविश्वसनीय और अकथनीय दोनों हैं, हमें यह मानने के लिए प्रेरित

करती है कि एक ईश्वर है जो इस चेतना की व्याख्या है। कांट का निष्कर्ष अजीब तरह से अस्पष्ट था लेकिन आधुनिक काल के लिए मौलिक था।

जब तक हम ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, हम इस तथ्य की व्याख्या नहीं कर सकते कि हम नैतिक प्राणी हैं, लेकिन खुद को समझाने में हम ईश्वर के ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकते, क्योंकि ईश्वर ने खुद को तर्क की सीमा से परे पाया है। वह नौमेनल दायरे में है, जहाँ हमारी पहुँच नहीं है। हमारे पास केवल अभूतपूर्व दायरे तक पहुँच है, और हम उस पर अपनी मुहर लगाते हैं क्योंकि हम चीजों को उस तरह नहीं जानते जैसे वे अपने आप में हैं।

हम उन्हें अपनी इंद्रियों से जिस तरह समझते हैं, उसी तरह जानते हैं। हम उन्हें अपने आप विकृत कर देते हैं। इसलिए, इसका परिणाम संदेह है, खासकर जब यह दिव्य ज्ञान से संबंधित हो।

क्या आप जानते हैं? पॉल उससे सहमत है। जो बातें परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में डाली हैं, उन्हें न तो आँख ने देखा है और न ही कान ने सुना है, अर्थात् जो बातें परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। 1 कुरिन्थियों 2, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें अपनी आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया है।

हम ईश्वर को सीधे नहीं जान सकते, लेकिन बाइबल दावा करती है कि ईश्वर ने खुद को प्रकट किया है, और बाइबल ईश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन है। प्रोस्टेट उदारवाद कांट और फ्रायड के बीच की अवधि में काफी हद तक फला-फूला, जिसने निस्संदेह इसके कार्य को थोड़ा आसान बना दिया, क्योंकि फ्रायड ने वास्तव में उस भोलेपन को नष्ट कर दिया जिसके साथ कांट ने इस नैतिक चेतना के बारे में बात की थी। फ्रायड ने तर्क दिया कि नैतिकता केवल एक कृत्रिम अवरोध है जिसे समाज अपने सदस्यों में चेतना की सतह के नीचे छिपी हुई अंधेरी भूमिगत शक्तियों से खुद को बचाने के लिए बनाता है।

नैतिक भावना हमारे स्वभाव और समाज की एक चाल है। बेशक, ये धाराएँ 20वीं सदी में भी प्रवाहित हुई हैं। कांटियन विचार, जो स्वयं, जो लगभग सभी आधुनिक ज्ञानमीमांसा का आधार है, ने आसानी से मन की वैज्ञानिक आदतों को अपना लिया है जिसमें अनुभव को इस तरह से माना जाता है जैसे कि वह पदार्थ की तरह परमाणुओं से बना हो।

अनुभव को असतत, पृथक इकाइयों में विभाजित किया गया है, जो अनुभव करने वाले विषय पर उसी तरह प्रभाव डालते हैं जैसे परमाणु परमाणुओं पर करते हैं। यह वह धारणा है जो रसेल, विट्गेन्स्टाइन के अधिकांश भाग और ए.जे. अय्यर और अधिकांश वर्तमान भाषाई दर्शन में व्याप्त है। इसके बाद तेजी से आत्म के तुलनीय विघटन का दौर आया है।

इसे भी परमाणु के रूप में माना जाता है। वास्तव में, इस प्रक्रिया में, विचारक इसे एक तरह से बदलते हुए देखते हैं जो परमाणुओं की गति और परिवर्तन के तरीके के बराबर है। स्वयं के विघटन, और विशेष रूप से ईश्वर की छवि में निर्मित इसके महत्व ने अर्थ को खोजना कठिन बना दिया है।

20वीं सदी में, हमने नीत्शे के सुपरमैन को उभरते देखा है, राजनीतिक वाम और दक्षिणपंथी दोनों के तानाशाह, जो मानते थे कि वे अधिनायकवादी शासन लागू कर सकते हैं क्योंकि लोगों के पास कोई आंतरिक मूल्य या अर्थ नहीं था। अनुभव और अनुभव करने वाले विषय विलीन हो गए हैं, और उनका स्थान इतिहास से उत्पन्न होने वाली और पूर्वनिर्धारित लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ने वाली अंधकारमय, अवैयक्तिक शक्तियों ने ले लिया है। दिलचस्प बात यह है कि इस स्थिति के खिलाफ सबसे जोरदार विरोध, जो अस्तित्ववाद का है, अभी भी इस बात को स्वीकार करता है कि मानव प्रकृति की कोई वास्तविकता नहीं है।

हालाँकि, यह अंतिम परिणाम तब स्पष्ट नहीं था जब उदार धर्मशास्त्र ने इस तरह की सोच के साथ आंशिक गठबंधन किया। बेशक, यह आंदोलन कई अलग-अलग विचारधाराओं में केंद्रित हो गया। यूरोप में, ये मुख्य रूप से एक तरफ श्लेयरमैचियन थे और दूसरी तरफ अनुष्ठान के समर्थक, एडॉल्फ हार्नेक जोर देते हैं।

डेविड वेल्स का तर्क है कि इन स्कूलों के बीच मतभेदों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है। यह कहना मुश्किल है कि रिट्सचलियन, अल्ब्रेक्ट रिट्सच के अनुयायी और हार्नेक के अनुयायी अगर श्लेयरमेकर को उदार प्रोटेस्टेंटिज्म का प्रतिनिधि मानते हैं तो उन्हें अनावश्यक रूप से नुकसान नहीं होगा। अमेरिका में, प्रमुख समर्थक वाशिंगटन ग्लेडेन और वाल्टर रौशनबुश जैसे लोग थे, जिन्होंने उदारवाद के सिद्धांतों को स्वीकार किया लेकिन अक्सर इन्हें सामाजिक सक्रियता से जोड़ दिया।

श्लेयरमेकर को आधुनिक धर्मशास्त्र का जनक कहा जाना उचित ही है, क्योंकि उन्होंने धर्मशास्त्र के क्षेत्र में जो पद्धति अपनाई है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। जहाँ कांट ने तर्क दिया था कि धार्मिक भविष्यवाणियाँ नैतिक चेतना पर आधारित होनी चाहिए, वहीं श्लेयरमेकर ने नैतिक चेतना के स्थान पर धार्मिक चेतना को प्रतिस्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि सभी लोगों के भीतर पूर्ण निर्भरता की भावना होती है।

यह वही है जिसे ईसाई धर्म स्पष्ट करता है, लेकिन इसकी उपस्थिति ईसाई समुदायों के भीतर पूरी तरह से समाहित नहीं है, न ही इसे अकेले ईसाई धर्मशास्त्र द्वारा वर्णित किया गया है। इसलिए, श्लेयरमेकर के लिए, ऐतिहासिक यीशु के भीतर ईश्वर का प्रकटीकरण उनके धर्मशास्त्र का एकमात्र प्रमुख केंद्र नहीं था। हालाँकि यीशु को विश्वास के अर्थ को बनाना और सुधारना है, लेकिन वह इसे विशेष रूप से परिभाषित नहीं करता है।

यह वह तर्क था जिसने बार्थ को शायद किसी और बात से ज़्यादा नाराज़ किया। श्लेयरमेकर के अनुसार सभी धर्मों में सत्य है। यीशु में सबसे ज़्यादा सत्य है; वह सबसे बेहतरीन प्रतिनिधि हैं।

उनमें नैतिक चेतना सबसे तीव्र थी, लेकिन उन्होंने नीचे से शुरुआत की। और इसलिए यीशु एक मात्र मनुष्य हैं, जो दुनिया के साथ निरंतर हैं, ईश्वर और सृष्टिकर्ता व्यवस्था के बीच कोई विच्छेद नहीं है। ऊपर से नीचे तक, विच्छेद और निरंतरता, ये भेद पूरी चीज़ में चलते हैं।

और इसलिए, बहुत सरल होने के कारण, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी ने ऊपर से क्राइस्टोलॉजी और निरंतरता पर जोर दिया। आधुनिक धर्मशास्त्र नीचे से क्राइस्टोलॉजी और निरंतरता पर जोर देता है। यह बहुत सरल है, लेकिन इसमें बहुत सच्चाई है।

इसमें सभी तरह की विविधताएं और बारीकियां हैं। हालाँकि श्लेयरमेकर अपने धर्मशास्त्र के सामान्य संबंधों के बारे में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं थे, लेकिन यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट लगता है कि उनकी संचालन संबंधी धारणाएँ रोमांटिकवाद से ली गई थीं। और कई मायनों में, ये उन्हें पहले के यूनानी धर्मशास्त्र के अनुरूप ले आए।

उन्होंने माना कि मानव प्रकृति, सभी मानव प्रकृति, ईश्वरीयता का प्राकृतिक पात्र है, ईश्वरीयता मानव में नैतिक, मनोवैज्ञानिक और ज्ञानमीमांसा रूप से संचार करती है और उसे भरती है। इस अर्थ में, मानव प्रकृति उतनी ही पवित्र है जितनी कि वह इंगित करती है। ईश्वरीयता मानव प्रकृति में और उसके माध्यम से स्वयं संचारित होती है।

इसलिए, यीशु इसलिए महत्वपूर्ण थे क्योंकि किसी और में उनकी तुलना में उन्होंने ईश्वर पर ध्यान केंद्रित किया, अपनी पहचान बनाई और फिर खुद को ईश्वर के सामने समर्पित कर दिया। लेकिन क्या वह ईश्वर-मनुष्य थे? नहीं। उनमें, हम जीवन में ईश्वरीयता की सबसे स्पष्ट व्याख्या देखते हैं, हालाँकि यह कोई विशिष्ट व्याख्या नहीं है।

ईश्वर की चेतना का सबसे बड़ा बोध उन्हें था, किसी भी व्यक्ति से अधिक। और ईश्वरीयता के कारण, हम यह भी पहचान पाते हैं कि हमारा अपना स्वभाव कैसा है क्योंकि यह आदम की पवित्रता को दर्शाता है। श्लेयरमेकर की महान पुस्तक, द क्रिश्चियन फेथ, ए सिस्टमैटिक थियोलॉजी में विशेष रूप से क्राइस्टोलॉजिकल फोकस आश्चर्यजनक रूप से संक्षिप्त है।

श्लेयरमेकर की उन सवालों के प्रति तुलनात्मक उदासीनता, जिन्होंने पहले के विचारकों को परेशान किया था, ने आलोचना की बौछार के लिए आधार तैयार किया, जो बाद में बार्थ के नेतृत्व में नव-रूढ़िवादी विद्वानों से आई, जिन्होंने प्रोफेसर बनने के बाद हर साल श्लेयरमेकर को बार-बार पढ़ाया। उन्होंने इसे हार्नैक के उदारवाद के साथ-साथ दुश्मन के रूप में देखा, जिसे उन्हें पढ़ाया गया था। दोनों मोर्चों पर, उन्होंने उन चीजों का विरोध किया और वास्तव में, एक अर्थ में, एक नव-रूढ़िवाद था।

सुधारकों और प्यूरिटन के बराबर? नहीं। लेकिन कई मायनों में, पुराने उदारवाद या श्लेयरमेकर के रोमांटिकवाद से कहीं बेहतर। जाहिर है, श्लेयरमेकर ने यीशु को ईश्वर-चेतना की पूर्णता और अंतिम उदाहरण के रूप में सोचा था, पूर्ण निर्भरता की भावना, जो उनके जर्मन शब्दों का अंग्रेजी अनुवाद है।

यही वह है जो हर किसी के पास है, और यीशु के पास यह सर्वोच्च रूप से है, और ईसाई उस पर विश्वास के साथ इसे विकसित करते हैं। यीशु को दूसरों से अलग करने वाली बात उनकी मानवता नहीं थी, बल्कि, उद्धारण, उनकी ईश्वर-चेतना की निरंतर शक्ति थी, जो उनके अंदर ईश्वर का वास्तविक अस्तित्व था। उद्धारण समाप्त करें।

श्लेयरमेकर ने "पूर्ण रूप से शक्तिशाली ईश्वर-चेतना को ईश्वर के अस्तित्व के साथ बराबरी पर रखा।" यह दर्शाता है कि अवतार से उनका क्या मतलब था। ईश्वर का अवतार इस व्यक्ति, यीशु के भीतर और उसके माध्यम से उनका जबरदस्त आत्म-संचार था।

श्लेयरमाकर ने इसे सर्वेश्वरवाद से अलग करने में कुछ कष्ट उठाए। और उनका तर्क था कि ईश्वर सभी चीज़ों में ऐसी अभिव्यक्ति नहीं करता, बल्कि केवल लोगों में ही आता है। और वह केवल एक व्यक्ति, अर्थात् यीशु में इस अंतिम अभिव्यक्ति तक आया है।

फिर उन्होंने यह दावा करने के लिए संघर्ष किया कि सभी लोगों में ईश्वर की यह चेतना, वास्तव में, ईश्वर का अस्तित्व नहीं कहला सकती क्योंकि यह हमेशा अपर्याप्त रूप से केंद्रित और साकार होती है। केवल यीशु में ही यह ईश्वर-चेतना एक "अस्तित्व" थी, और इस अर्थ में, वह अद्वितीय थी। श्लेयरमेकर सार्वभौमिक धर्म की ज्ञानोदय धारणा को मसीह की विशिष्टता की ईसाई अवधारणा के साथ जोड़ने में सफल रहे या नहीं, यह सबसे संदिग्ध है।

श्लेयरमेकर ने मानवीय, ऐतिहासिक, क्षमा करें, ऐतिहासिक क्राइस्टोलॉजिकल कथनों का समर्थन नहीं किया जैसे कि दो प्रकृतियाँ, दिव्य और मानव, एक व्यक्ति में अविभाज्य रूप से एकजुट हैं, एक मसीह हैं। उन्होंने तर्क दिया कि यीशु मसीह का नाम केवल जीवन की सांसारिक अवधि के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है और इसे पीछे की ओर अनंत काल तक नहीं बढ़ाया जा सकता है जैसा कि हो गया था, जैसा कि उन्होंने महसूस किया कि दिव्य और मानव दोनों का वर्णन करने के लिए एक ही शब्द प्रकृति का उपयोग करना अनुचित था और यह अतीत में सभी भ्रम का स्रोत था। दो-प्रकृति सिद्धांत का उन्मूलन धार्मिक स्पष्टता के लिए शर्त थी, और चूंकि वह त्रिदेव की पारंपरिक समझ के साथ सामंजस्य से बाहर था, इसलिए श्लेयरमेकर व्यक्ति शब्द के उपयोग पर पक्ष नहीं ले सकता था।

उन्होंने इस पूर्ण निर्भरता की भावना को अपना धार्मिक मानदंड, अपना आदर्श मानदंड बना लिया, ताकि उनके ईसाई धर्मशास्त्र में, त्रिदेव, जो लोगों की ईश्वर चेतना का सामान्य अनुभव नहीं है, को हमारे स्वर्ग और नरक के रूप में परिशिष्ट के रूप में रखा जाए क्योंकि वे उस परीक्षा में पास नहीं होते। यह आश्चर्यजनक है। मेरा मतलब है कि यहाँ एक प्रतिभाशाली व्यक्ति काम कर रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन एक बार फिर एक प्रतिभाशाली व्यक्ति सच्चाई से भटक गया। श्लेयरमाकर ने अवास्तविक संघ के कुछ समर्थकों के साथ भी मुद्दा उठाया।

अर्थात्, यीशु की मानवता मैरी के गर्भ में शब्द के साथ एकता में हाइफ़न व्यक्तिगत है, जिसने तर्क दिया था कि मसीह की मानवीय प्रकृति, हालांकि हर तरह से पूर्ण है, व्यक्ति के बाहर पूर्णता तक नहीं पहुंची। कोई भी साधारण मानव यीशु नहीं है। उन्होंने घोषणा की कि हम जो पुष्टि कर सकते हैं, वह यह है कि साधारण लोगों में, अपूर्ण और अस्पष्ट ईश्वर-चेतना का केवल बीज होता है।

लेकिन ईसा मसीह के मानव विकास की शुरुआत से ही, पूरी तरह से शक्तिशाली ईश्वर की चेतना से एक उद्धारण था। ओह बाँय। उद्धारण बंद करें।

इस प्रकार, ईश्वरीय प्रभाव उद्धारण मानव प्रकृति पर आया और, एक ही समय में मानव चेतना में ईश्वर का अवतार और मानव प्रकृति का मसीह के व्यक्तित्व में गठन हुआ। उद्धारण बंद करें। इस विकास के होने के लिए, कुंवारी जन्म की आवश्यकता नहीं थी।

न ही इससे जुड़ी न्यू टेस्टामेंट की कहानियों को सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। वह एक ईश्वरीय लूथरन पादरी का बेटा था। इसलिए, उसके अंदर अक्सर धार्मिक आवेग होता है, और यही मामला है।

और फिर भी उन्होंने संस्कृति के प्रति घृणा रखने वालों की सेवा की। उन्होंने उन्हें पढ़ा, और उनके विचार कॉफी हाउस और अन्य जगहों का विषय बन गए। जबकि अधिक पारंपरिक चीजें ऐसी नहीं थीं।

इसे उबाऊ माना जाता था। इसे स्वीकारोक्तिपूर्ण उबाऊ, कठोर और उस तरह की चीज़ माना जाता था। उनका विचार उत्तेजक और प्रेरक और रचनात्मक था और दुर्भाग्य से, विधर्मी था।

तो फिर, मसीह के व्यक्तित्व में प्रकृतियाँ एक दूसरे से कैसे संबंधित थीं? श्लेयरमेकर ने तर्क दिया कि ईश्वर सक्रिय था, जो मानव को अपने अंदर समाहित कर रहा था, और मानव निष्क्रिय था, जो खुद को ईश्वर द्वारा भरे जाने और निर्देशित होने दे रहा था। उन्होंने कहा कि, इडियोमेटम में गुणों के संचार को सिद्धांत प्रणाली से बाहर कर दिया जाना चाहिए। क्योंकि दैवीय गुणों का मानव प्रकृति में या मानवीय गुणों का दैवीय प्रकृति में संचार उनके आवश्यक गुणों में संदूषण पैदा करेगा।

आप बाद में देखेंगे कि मैं बहस करने जा रहा हूँ और यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है कि बाइबल खुद गुणों के संचार की शिक्षा देती है। यानी यह एक वाक्य में मसीह के एक व्यक्ति के बारे में बात करती है, जिसका शीर्षक उसके ईश्वरीय स्वभाव से संबंधित है और एक ऐसा कार्य जो उसके मानवीय स्वभाव से संबंधित है। पिताओं ने इस पर ध्यान दिया।

यह एक बहुत ही रोचक घटनाक्रम है। 1 कुरिन्थियों 2. इस संसार के शासकों को परमेश्वर का ज्ञान नहीं पता था। उन्हें लगता था कि वे ज्ञानी हैं, लेकिन वे मूर्ख थे, क्योंकि अगर उन्हें क्रूस पर प्रकट परमेश्वर का ज्ञान और क्रूस पर प्रकट परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति का पता होता, तो वे महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते।

महिमा के प्रभु, या आप इसका अनुवाद गौरवशाली प्रभु कर सकते हैं, एक दिव्य उपाधि है। क्रूस पर चढ़ना देवता से संबंधित नहीं है। क्रूस पर चढ़ना मानवता से संबंधित है।

इब्रानियों 2:14 कहता है कि पुत्र ने अपने लिए मांस और लहू लिया ताकि मृत्यु के माध्यम से वह शैतान को हरा सके और अपने लोगों को छुड़ा सके। एक वाक्य है जो देहधारी पुत्र को महिमा का प्रभु कहता है और उसे नश्वरता का श्रेय देता है। यहाँ तक कि क्रूस पर चढ़ी नश्वरता भी।

यह गुणों का संचार है। यह एक दिव्य उपाधि से सम्मानित व्यक्ति के साथ मानवीय गुणों का आदान-प्रदान है। यह सबसे उत्सुकता की बात है।

अब श्लेयरमेकर जिस बात का विरोध कर रहे हैं, वह गुणों के संचार की लूथरन समझ है जो सुधारवादी समझ से बहुत अलग है। लूथर ने खुद यूचरिस्टिक कारणों से शिक्षा दी। भोज में तत्वों के साथ और उनके अंतर्गत मसीह की वास्तविक उपस्थिति को दर्शाने के लिए लूथर ने पुनरुत्थान में सिखाया कि ईश्वरीय गुणों को यीशु के ईश्वरत्व से उनकी मानवता में संचारित किया गया ताकि उनका मानवीय स्वभाव सर्वव्यापी या सर्वव्यापी हो सके।

केल्विन लूथर का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने उन्हें सुधार का प्रेरित कहा, और यह सही भी था। मुझे नहीं पता कि क्या किसी और में लूथर जैसा करने का साहस होता।

प्रकृति के संचार की पुष्टि ठीक उसी अर्थ में की थी जैसा मैंने कहा था। यानी यह एक असामान्य बाइबिल तरीका है। मेरे पास ऐसा कोई आधा दर्जन स्थान नहीं है जहाँ आप इसे पा सकें।

1 यूहन्ना 1. जीवन का वचन एक ईश्वरीय उपाधि है। जीवित वचन। जीवन का वचन।

और प्रेरितों के बारे में जो कहा गया है वह यह है कि उन्होंने देखा, उन्होंने सुना, और उनके हाथों ने जीवन के वचन को संभाला। पहली बात यह है कि एक यूनानी इस पर शर्मिंदा होगा। तुम पागल हो।

आप ईश्वर को छू नहीं सकते, और वास्तव में, आप छू नहीं सकते। लेकिन जिसे उन्होंने छुआ, ईश्वर मनुष्य, वह ईश्वर था। इसलिए मानवीय विधेय, इंद्रियों के प्रति संवेदनशील होना, देखा, सुना और छुआ जा सकने में सक्षम होना, उसे ईश्वरीय उपाधि से पुकारा जाता है, जिसे जीवन का शब्द कहा जाता है।

धर्मग्रंथ व्यक्ति की एकता की पुष्टि कर रहा है। समझे? यह उसे ईश्वर कहता है, लेकिन फिर यह ईश्वर को मानवता बताता है। यह काफी उल्लेखनीय है।

पिता ने इसे देखा। वैसे भी, यही बात है जिसे श्लेयरमाकर ने खारिज किया, लूथरन समझ, और मैं उसे दोष नहीं देता। मुझे कहना चाहिए कि बाइबल पर विश्वास करने वाले लूथरन, बाइबल पर विश्वास करने वाले कैल्विनिस्टों के साथ साथी सुधारवादी, सुधारवादी ईसाई हैं।

और मैं हमारी साझा धार्मिक विरासत और उस तरह की चीजों की सराहना करना चाहता हूँ। हालाँकि, इस विशेष बिंदु पर, मैं निश्चित रूप से गुणों के संचार के सुधारवादी दृष्टिकोण को अपनाता हूँ न कि लूथरन दृष्टिकोण को। हालाँकि, श्लेयरमाकर ने तर्क दिया कि गुणों के संचार को सिद्धांत की प्रणाली से बाहर कर दिया जाना चाहिए क्योंकि मानवीय प्रकृति में दैवीय गुणों का संचार या मानवीय गुणों का दैवीय प्रकृति में संचार आवश्यक विशेषताओं के संदूषण का कारण बनेगा।

मनुष्य मनुष्य से भिन्न होगा, और ईश्वरीय ईश्वरीय से कम होगा। श्लेयरमेकर ने जो वास्तव में प्रस्तुत किया वह अवतार का सिद्धांत नहीं बल्कि प्रेरणा का सिद्धांत था। यह यीशु को एक ईश्वर-पूर्ण व्यक्ति के रूप में देखना था जो नीचे से शुरू होता है।

समझे? यदि आप बिल्कुल नीचे से शुरू करते हैं, तो आप रूढ़िवादिता प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि आपके पास एक ऐसा व्यक्ति है जिसे ईश्वर किसी तरह से दिव्य बनाता है, उसमें निवास करता है, उसे सशक्त बनाता है, उसे परिपूर्ण बनाता है, जो भी आप चाहते हैं। और परिणामस्वरूप हमारे समय के सबसे आधुनिक धर्मशास्त्र में, यीशु का वह दिव्यीकरण वही है जिसे उदारवादी, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक, सभी मनुष्यों के भाग्य के रूप में देखते हैं। निस्संदेह, श्लेयरमाकर पारंपरिक सूत्रों में निहित अधिकांश समस्याओं से बचने में सक्षम थे।

लेकिन किस कीमत पर? उसे ईश्वरीय और मानवीय प्रकृति के बीच, निरपेक्ष और सापेक्ष प्रकृति के बीच के रिश्ते की समस्या को संबोधित करने की ज़रूरत नहीं थी। न ही उसे इन प्रकृतियों और उस एक व्यक्ति के बीच के रिश्ते को सूत्रबद्ध करना था जिसमें वे एक थे। यीशु बस एक इंसान था जिसके पास ईश्वर की शक्तिशाली भावना थी।

हालांकि, क्राइस्टोलॉजी के लिए तत्काल लाभ ईसाई धर्म के लिए गंभीर नुकसान थे। संघर्ष के बावजूद, श्लेयरमेकर कभी भी यह कहने में सफल नहीं हुए कि यीशु कैसे अद्वितीय थे। ईश्वर-चेतना उनमें सबसे शक्तिशाली तरीके से निवास करती थी।

और इस प्रकार, आधुनिक धर्मशास्त्र के पिता, जितने प्रतिभाशाली थे, उन्होंने कई अन्य लोगों को गुमराह किया। यीशु मानव में दिव्यता का एक अनूठा आक्रमण नहीं था, ऊपर से नीचे आने वाला क्राइस्टोलॉजी, वास्तव में नीचे, लेकिन केवल वही पूर्णता थी जो सभी लोगों में पहले से मौजूद थी। सृष्टि के साथ निरंतरता, आप इसे समझते हैं? भगवान और निर्मित व्यवस्था के बीच।

ये बातें पूरे क्राइस्टोलॉजी को निर्धारित करती हैं। न ही ईसाई धर्म की विशिष्टता को इससे खो दिया गया। लेकिन यह स्पष्ट नहीं था कि यीशु वास्तव में विश्वास के लिए क्यों महत्वपूर्ण थे।

यह सच है कि श्लेयरमेकर ने उन्हें ईश्वर के स्पष्टीकरणकर्ता, ईश्वरीय उत्कृष्टता के व्याख्याता के रूप में देखा, और अंत में, जो महत्वपूर्ण था वह विचार था, लेकिन अंत में, जो महत्वपूर्ण था वह विचार था न कि वह व्यक्ति जिसके द्वारा इसे अभिव्यक्त किया गया। और यह विचार और चेतना जिसके द्वारा इसकी उपस्थिति दर्ज की जाती है, एक सामान्य मानवीय संपत्ति है। सभी लोगों में ईश्वर के बारे में यह जागरूकता है।

यही कारण है कि श्लेयरमेकर ने अपने सुसंस्कृत तिरस्कार करने वालों को संबोधित किया, और वे उससे सहमत हुए। लेकिन एक बार फिर, किस कीमत पर? इसलिए श्लेयरमेकर का धर्मशास्त्र मानव जीवन के बारे में 19वीं सदी की आम धारणाओं का एक सराहनीय कथन था। लेकिन यह प्रेरितिक साक्ष्य के सार से बहुत दूर था।

यह इस बिंदु पर था कि श्लेयरमेकर को नव-रूढ़िवादी विचारकों द्वारा जवाबदेह ठहराया गया था और यह सही भी था। उस समय का एक और बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति, जिसके बारे में मुझे

क्राइस्टोलॉजी पर समकालीन पाठ्यपुस्तकों में शायद ही कुछ मिल पाता है, जो मुझे लगता है कि कुछ कहता है, वह है अल्ब्रेक्ट रिटशेल। श्लेयरमेकर को छोड़कर, यह बहुत संक्षिप्त होने जा रहा है। मुझे खेद है, लेकिन यह बस ऐसा ही है; वर्तमान धर्मशास्त्र पर किसी ने भी इतना अधिक प्रभाव नहीं डाला है; यह 1930 में लुई बर्कहोफ़ द्वारा लिखा गया है, ठीक है, अल्ब्रेक्ट रिटशेल की तुलना में।

आप ऊपर की ओर वर्तनी देख सकते हैं। उनका क्राइस्टोलॉजी मसीह के व्यक्तित्व के बजाय कार्य में अपना प्रारंभिक बिंदु लेता है। इस बात पर जोर दिया गया है, और बाद के धर्मशास्त्र में भी इसे और अधिक बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है, कि हम यीशु को किसी ग्रीक अमूर्त तरीके से नहीं जानते हैं, जो सार और प्रकृति और व्यक्ति और उस तरह की चीजों के बारे में बात करते हैं, बल्कि हम एक कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी चाहते हैं।

यही बात हमें नया नियम देता है। यह सार और यूनानी शब्दावली से संबंधित नहीं है; यह यीशु को गतिशील रूप में प्रस्तुत करता है, और इस प्रकार, आप व्यक्ति से नहीं बल्कि कार्य से शुरू करते हैं। बेहतर होगा कि मैं भूलने से पहले इसका मूल्यांकन कर लूं।

यह सच है कि नया नियम एक कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी प्रस्तुत करता है। मैं कहूँगा कि नया नियम एक कार्यात्मक त्रित्ववाद भी प्रस्तुत करता है। यह ईश्वर और व्यक्तियों के अस्तित्व और उस तरह की चीजों के बारे में अमूर्त रूप से अनुमान नहीं लगाता है, लेकिन इसके कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी और इसके कार्यात्मक त्रित्ववाद दोनों के पीछे एक ऑन्टोलॉजिकल क्राइस्टोलॉजी और एक ऑन्टोलॉजिकल त्रित्ववाद है।

इसके अलावा, बाइबल कभी-कभी, जैसा कि हम इब्रानियों 1 में देखेंगे, पुत्र के बारे में बात करती है; वह परमेश्वर की आवश्यक प्रकृति का सटीक प्रतिनिधित्व है। ग्रीक शब्द, धर्मत्याग। क्राइस्टोलॉजिकल जनगणना में इसका इस्तेमाल अलग तरीके से किया गया है, लेकिन यह कह रहा है कि इस शब्द का अर्थ सार, आवश्यक प्रकृति, बहुत अस्तित्व है।

यीशु इसका सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए कभी-कभी यह शायद ही कभी इसके बारे में, सार के बारे में, आमतौर पर कार्य के बारे में बोलता है, लेकिन हम एक कार्य से सार तक वापस तर्क करते हैं। हम नए नियम की गवाही को, चाहे वह त्रिदेव की हो या मसीह की, केवल कार्यात्मकता तक सीमित नहीं करते।

इसका मतलब है कि व्यक्ति की अवमानना करने के लिए कार्य पर ज़ोर देना, और यह एक बड़ी गलती है। मसीह का कार्य उसके व्यक्तित्व की गरिमा निर्धारित करता है। वह एक साधारण मनुष्य था।

क्या मैं नीचे से ही क्राइस्टोलॉजी को महसूस करता हूँ? हाँ, मैं महसूस करता हूँ। यह पुराना उदारवाद है। वह एक साधारण इंसान था।

पुराने उदारवाद ने कट्टरवाद पर हमला करने में बहुत समय लिया, और मैं कट्टरवाद के हर पहलू का बचाव नहीं करूंगा। उदारवादियों ने स्कूलों में जीत हासिल की। कट्टरपंथियों ने बाइबल स्कूलों के साथ जवाब दिया।

वे शिक्षा के उन संस्थानों के बराबर नहीं थे, जिन पर उदारवादियों ने कब्ज़ा कर लिया था। मैं कहूँगा कि आज, इंजीलवाद ने बहुत अच्छा काम किया है। अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ थियोलॉजिकल स्कूल्स में उदारवादी स्कूलों की तुलना में ज़्यादा इंजीलवादी स्कूल हो सकते हैं, और उनमें से कई अकादमिक रूप से अच्छे और सक्षम हैं।

अभी भी ऐसे उदारवादी स्कूल हैं जो अकादमिक रूप से सक्षम हैं, लेकिन उदारवाद कट्टरवाद पर हमला करने में व्यस्त था, और कुछ मायनों में, यह उचित था, लेकिन अन्य तरीकों से, उन्होंने विश्वास के मूल सिद्धांतों को नकार दिया, जिससे कट्टरवाद को अपना नाम मिला, और इसमें कुंवारी जन्म, यीशु का देवता और चमत्कार, रक्त प्रायश्चित और उनका दूसरा आगमन शामिल था, और यह ईसाई धर्म को ही नकारना है। मैं उन चीजों के हर कट्टरपंथी स्पष्टीकरण का बचाव नहीं करूँगा, लेकिन वे जो सत्य व्यक्त कर रहे थे, चाहे वह बेहतर हो या बुरा, वे बाइबिल के सत्य थे, और उदारवाद उन सत्यों को अस्वीकार करने में गलत हो गया। अल्ब्रेक्ट रिट्शल के लिए यीशु एक साधारण मनुष्य थे, लेकिन उनके द्वारा किए गए कार्य और उनके द्वारा की गई सेवा को देखते हुए, हम सही मायने में उन्हें ईश्वरत्व का विधेय मानते हैं।

इसका क्या मतलब है? अगला वाक्य हमें समझने में मदद करता है, जैसा कि बिरखॉफ़ बताते हैं, यह फिर से लुइस बिरखॉफ़ के सिस्टमैटिक थियोलॉजी, पृष्ठ 310 से है। रिट्चल पूर्व-अस्तित्व, अवतार को खारिज करता है, और ऊपर से कोई क्राइस्टोलॉजी नहीं है, कोई रूढ़िवाद नहीं है, और मसीह का कुंवारी जन्म है। चूँकि यह ईसाई समुदाय की विश्वास करने वाली चेतना में संपर्क का कोई बिंदु नहीं पाता है, इसलिए श्लेयरमेकर व्यक्तियों की विश्वास करने वाली चेतना, अनुष्ठान को अपने ज्ञानमीमांसा में अधिक सांप्रदायिक मानते हैं।

मसीह परमेश्वर के राज्य के संस्थापक थे, इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य को अपना बना लिया, और अब, किसी तरह से, लोगों को ईसाई समुदाय में प्रवेश करने और पूरी तरह से प्रेम से प्रेरित जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। वह अपनी शिक्षा, उदाहरण और अद्वितीय प्रभाव से मनुष्य को मुक्ति दिलाता है, और इसलिए वह परमेश्वर कहलाने के योग्य है। यह वस्तुतः सब्बाथ के पॉल के सिद्धांत का नवीनीकरण है, जो एक प्रारंभिक विधर्म था जिसे मोडलिज्म के लिए जाना जाता था।

ध्यान दें कि मसीह अपनी शिक्षा, उदाहरण और अद्वितीय प्रभाव के द्वारा उद्धार करता है। ऐसा लगता है कि ये बातें सच हैं, लेकिन सबसे गहराई से, वह पापियों के स्थान पर मरकर और शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन फिर से जी उठकर उद्धार करता है। पुराना उदारवाद वास्तव में उदारवाद है, और यह कम पड़ता है, और मैं आधुनिक क्राइस्टोलॉजी के बारे में हमारे अगले व्याख्यानों का पूर्वावलोकन दूँगा।

बार्ट ब्रूनर, जिनके बारे में हम शायद थोड़ी चर्चा करेंगे, और बुल्टमैन, वैसे भी, पुरानी उदारवादी परंपरा से एक मजबूत विच्छेद का प्रतिनिधित्व करते हैं। बुल्टमैन फिर अपने अस्तित्ववादी दिशा में चले गए, और वह और बार्ट वास्तव में बहुत असहमत थे, लेकिन उन्होंने पुरानी उदारवादी अन्तर्निहितता को खारिज कर दिया और एक वास्तविक अवतार के साथ ऊपर से शुरुआत की। यह अविश्वसनीय था।

यह पारलौकिकता, ईश्वर की अन्यता की ओर एक बड़ा बदलाव था जिसके बारे में बार्ट ने बात की थी। हम न केवल ऐतिहासिक यीशु की खोज, मूल खोज के बारे में अधिक बात करेंगे, हमने श्वित्ज़र द्वारा उन पर प्रहार करके इस पर कुछ किया है, बल्कि बुल्टमैन द्वारा नए नियम को कुछ पन्नों तक सीमित करने की बात जो यीशु से जुड़ी हो सकती थी, ने इस तरह की निरर्थकता को जन्म दिया। मुझे प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी में एक छात्र, एक इंजील छात्र से बात करना याद है, जो उस समय बुल्टमैनियन द्वारा संचालित था।

मैंने कहा, मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या आप वहाँ सेवकाई की तैयारी करने गए थे? हाँ, सर। यह आदमी प्रभु से प्रेम करता था।

वह यूनाइटेड प्रेस्बिटेरियन चर्च के भीतर सच्चाई के लिए लड़ने के लिए दृढ़ था, और उसे नियुक्त किया जाना था। उसे प्रिंसटन या किसी स्वीकृत सेमिनरी में जाना था, ठीक है? वेस्टमिंस्टर या कोवेनेंट या रिफॉर्म में नहीं। उस दिन यह काम नहीं आया। मैंने कहा, मेरे पास आपके लिए एक सवाल है।

आप संभवतः नए नियम के अवशेषों से क्या उपदेश देते हैं? उन्होंने कहा, यह एक अच्छा सवाल है, और उन्होंने वास्तव में उसी विषय पर बुल्टमैनियन न्यू टेस्टामेंट प्रोफेसरों की शिक्षा के बाद एक पाठ्यक्रम तैयार किया। ओह, मेरे शब्द। न्यूनीकरणवाद बहुत बड़ा है, और इसलिए यह था कि बुल्टमैन के शिष्य, वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

वे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। गुंथर बोनकैम, अर्नेस्ट कासेमन और अन्य लोगों ने ऐतिहासिक यीशु की खोज शुरू की और उनके पास न्यू टेस्टामेंट के बारे में उनसे कहीं ज़्यादा जानकारी थी। मेरा मतलब है, हम यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं? आपसे कहीं ज़्यादा।

मेरा मतलब है, पूरी बात इतनी विकृत है, लेकिन उन्होंने ऐसा किया। और मुझे नहीं पता। मुझे नहीं पता।

यह उनके व्यवसाय से बेहतर था, लेकिन हे भगवान। और फिर, हम हाल ही के, सबसे प्रभावशाली लोगों पर विचार करेंगे। बार्थ 20वीं सदी के प्रमुख धर्मशास्त्री थे, कम से कम इसके अधिकांश भाग के लिए, लेकिन इसके अंत में, वोल्फहार्ड पैननबर्ग और जुर्गन बुल्टमैन, दो जर्मन धर्मशास्त्री, बहुत प्रभावशाली थे।

क्राइस्टोलॉजी की जांच करेंगे। वे निश्चित रूप से बुल्टमैन से बेहतर हैं, और वे कुछ मामलों में रूढ़िवादी हैं लेकिन अन्य में नहीं। हम कुछ रोमन कैथोलिक विचारकों पर विचार करेंगे।

हंस कुंग, जिन्होंने खुद को मार डाला, मेरे पास सही शब्दावली नहीं है। पोप की अचूकता से उनकी असहमति के कारण उन्हें जर्मनी के ट्यूबिंगन में कैथोलिक सिद्धांत का आधिकारिक शिक्षक नहीं बनाया गया। हम उनके क्राइस्टोलॉजी और कार्ल रेनर के क्राइस्टोलॉजी की जांच करेंगे, जो एक शानदार अस्तित्ववादी रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री थे, जो चार्ल्सडन में बहुत प्रभावशाली थे, क्षमा करें, वेटिकन II, दूसरी वेटिकन परिषद में।

यार, वह फ्रायडियन स्लिप थी, एक महान क्षण। रेनर ने 60 के दशक के मध्य में वेटिकन II को प्रभावित किया, और कैथोलिक चर्च की पूरी दिशा बदल गई। हम ट्रिनिटी के बारे में उनकी शिक्षा के प्रकाश में उनके क्राइस्टोलॉजी के बारे में सोचेंगे, कैसे आर्थिक ट्रिनिटी अंतर्निहित ट्रिनिटी है, ऑन्टोलॉजिकल ट्रिनिटी, और अनाम ईसाई धर्म की उनकी धारणा, जहां कैथोलिक धर्म अब सार्वभौमिकता की उम्मीद करता है।

ये महत्वपूर्ण मामले हैं। हम ब्रिटिश बिशप जेएटी रॉबिन्सन पर नज़र डालेंगे, जो एक वैध न्यू टेस्टामेंट विद्वान थे, जिन्होंने अपनी पुस्तक ऑनेस्ट टू गॉड से आम ब्रिटिश लोगों के दिमाग को हिला दिया, जिसमें उन्होंने सभी प्रकार की चीज़ों पर सवाल उठाए और सभी प्रकार की चीज़ों का खंडन किया। हम एक प्रक्रिया धर्मशास्त्री के क्राइस्टोलॉजी पर बस एक संक्षिप्त नज़र डालेंगे।

पिटेंजर ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने वास्तव में इसे लिखा है, और फिर हम, भगवान की इच्छा से, एक प्रस्तुति के साथ समाप्त करेंगे जिसने ब्रिटिश जनता और चर्च जाने वालों को चौंका दिया, ईश्वर के अवतार का मिथक। कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड के प्रसिद्ध प्रोफेसरों का कहना है कि वे अवतार और इस तरह की अन्य बातों में विश्वास नहीं करते हैं। इसके बाद उसी वर्ष एक लेखक, इतिहासकार और कई खंडों के संपादक के रूप में काम किया।

मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूँ। उसी वर्ष, इंजीलवादियों द्वारा द ट्रुथ ऑफ गॉड इन्कार्नेट नामक पुस्तक लिखी गई थी। पिछली पुस्तक ने बहुत धूम मचाई थी और बहुत से लोगों की आस्था को झकझोर दिया था।

ईश्वर के अवतार का सत्य सामने आया। ये कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर हम अपने अगले व्याख्यान में चर्चा करेंगे, लेकिन इस बीच, आपके ध्यान के लिए धन्यवाद, और ईश्वर आपको आशीर्वाद दे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 6, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 1, कांट, श्लेयरमेकर और रिट्शल है।